पूर्वपक्षव्याप्तिः

साध्याभाववदवृत्तित्वं - इसका अर्थ है - साध्याभावाधिकरणनिरूपितवृत्तित्वाभावत्वं।

यह लक्षण यदि सद्धेतु में घटता है तो ठीक है, नहिं तो लक्षण अव्याप्ति दोष से ग्रस्त माना जायेगा और यदि असद्धेतु में लक्षण नहिं घटता है तो ठीक है, अगर घटता है तो लक्षण अतिव्याप्ति दोष से ग्रस्त माना जायेगा।

जैसे - पर्वतो वह्निमान् धूमात् - यह सद्धेतु स्थल है क्योंकि हेतु व्यभिचार दोष से रहित है। यत्र यत्र धूमः तत्र तत्र वह्निः यह व्याप्ति है। इस व्याप्ति में साध्याभाववद्वृत्तित्वरूपी व्यभिचार दोष नहीं है। क्योंकि साध्य है वह्नि, साध्याभाव हुआ वह्न्यभाव, साध्याभाववद् वह्न्यभाववद् हुआ जलह्रदादि, तन्निरूपित वृत्तित्व मीनादि में है, धूम में नहीं है अर्थात् धूम में अवृत्तित्व है। अतः व्यभिचार दोष नहीं है अपितु लक्षण सद्धेतु स्थल में समन्वय हो गया। असद्धेतु स्थल में यह लक्षण नहीं जायेगा। कैसे? पर्वतो धूमवान् वह्नेः - यह असद्धेतु स्थल है। यत्र यत्र वह्निः तत्र तत्र धूमः यह व्याप्ति होगा, इसमें व्यभिचार दोष है। क्योंकि साध्य है धूम, साध्याभाव हुआ धूमाभाव, साध्याभाववद् धूमाभाववद् हुआ अयोगोलक, तन्निरूपित वृत्तित्व ही वह्नि में है, अवृत्तित्व नहीं है। अतः वह्निरूपी हेतु में व्यभिचार का लक्षण घटने से यह असद्धेतु है और व्याप्ति का लक्षण न घटने से व्याप्ति का लक्षण सर्व दोष से रहित है अर्थात् सम्यक् है।

लेकिन प्रकृत लक्षण में साध्याभाव को किस संबंध से ग्रहण करना चाहिये यह नहीं कहा गया है, अर्थात् साध्याभाव का शरीर में संबंधविशेषग्राहक विशेषण नहीं दिया गया है। अतः जिसकिसी भी संबंध से साध्याभाव को लेकर पर्वतो वह्निमान् धूमात् इस सद्धेतु स्थल में अव्याप्ति दोष दे सकते हैं। कैसे? पर्वत में वह्नि संयोग संबंध से रहता है, समवायसंबंध से नहीं रहता है, अपितु अपने अवयवों में समवाय संबंध से रहता है क्योंकि अवयवावयविनोः समवायः - यह सिद्धान्त है। अतः साध्य है वह्नि, समवाय संबंध से साध्य का अधिकरण है वह्न्यवयव, साध्याभाव वह्न्यभाव का अधिकरण होगा पर्वत, तन्निरूपित वृत्तित्व ही धूम में है, अवृत्तित्व नहीं। जिसलिये सद्धेतु में लक्षण नहीं घटा इसलिये लक्षण अव्याप्ति दोष से ग्रसित हुआ। इस दोष को निवारण करने केलिये लक्षण के साध्याभाव का शरीर में साध्यतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न यह विशेषण देना चाहिये । तब लक्षण का स्वरूप ऐसा होता है - साध्यतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्नप्रतियोगिताकसाध्याभावाधिकरणनिरूपितवृत्तित्वाभावो व्याप्तिः। साध्य जिस संबंध से पक्ष में रहता है उस संबंध को साध्यतावच्छेदकसंबंध कहा जाता है। अतः प्रकृतस्थल में साध्य वह्नि पक्ष पर्वत में संयोग संबंध से रहने के कारण साध्यतावच्छेदकसंबंध है संयोगसंबंध, उस संबंध से साध्याभावाधिकरण पर्वत नहीं हो सकता किन्तु जलह्रदादि होगा, तन्निरूपित वृत्तित्व मीनादि में है और अवृत्तत्व धूम में होने से लक्षण सद्धेतु स्थल में समन्वय हो गया। अतः लक्षण में अव्याप्ति दोष नहीं रहा।

उक्त विशेषण को देने के बावजूद भी उक्त सद्धेतु स्थल में ही अव्याप्ति दोष रह जाता है। कैसे? एकसत्त्वे अपि द्वयं नास्ति न्याय से, यदि कोई पूछें - वहां राम और श्याम दोनों हैं, तो वहां अकेले राम का रहने पर भी आप प्रश्न के अनुरूप जवाब देंगे - दोनों नहीं है। इसे एक सत्त्वे अपि द्वयं नास्ति न्याय कहते हैं। इस न्याय के अनुसार पर्वत में अकेले वह्नि रहने पर भी वह्निघट उभय नहीं है। अतः साध्यतावच्छेदकसंयोगसंबंधावच्छिन्नप्रतियोगिताकसाध्याभावशब्द से उक्त न्याय के अनुसार वह्निघटोभयाभाव लिया जा सकता है, तादृश उभयाभाव का अधिकरण होगा पर्वत, क्योंकि पर्वत में वह्नि रहने पर भी वह्निघटोभय नहीं है, तन्निरूपित वृत्तित्व धूम में ही है, अवृत्तित्व नहीं। अतः प्रकृत सद्धेतु स्थल में लक्षण न घटने से लक्षण अव्याप्ति दोष से ग्रस्त हो गया। इस दोष को दूर करने केलिये लक्षण के साध्याभाव का शरीर में साध्यतावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्न यह विशेषण देना होगा। तब लक्षण का स्वरूप ऐसा होगा - साध्यतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्नप्रतियोगिताकसाध्याभावाधिकरणनिरूपितवृत्तित्वाभावो व्याप्तिः। साध्य जिस स्वधर्म अथवा स्वगतजाति से अवच्छिन्न होकर अर्थात् अधिकरण आदि अन्य वस्तु या अन्य धर्म से परिच्छिन्न न होकर पक्ष में रहता हो उस स्वधर्म अथवा स्वगतजाति को साध्यतावच्छेदक कहा जाता है। प्रकृतस्थल में साध्य है वह्नि, साध्यतावच्छेदक स्वगतजाति है वह्नित्व, उससे

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

इतर घटत्व से अवच्छिन्न है वह्निघटोभयाभाव, क्योंकि वह्निघटोभयाभाव का प्रतियोगि वह्नि और घट दोनों है, उनके अवच्छेदक भी दो हैं - वह्नित्व और घटत्व। अतः उभयाभाव वह्नित्व से इतर घटत्व से अवच्छिन्न होने के कारण लक्षण में उपयोगी नहीं है। इसलिये साध्यतावच्छेदकसंयोगसंबंधावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकवह्नित्वेतरघटत्वाद्यनवच्छिन्नप्रतियोगिताक साध्याभाव होगा केवल वह्न्यभाव, तादृश वह्न्यभाव का अधिकरण पर्वत नहीं हो सकता, क्योंकि एक सत्त्वे अपि द्वयं नास्ति न्याय के अनुसार पर्वत में भले वह्निघटोभयाभाव हो लेकिन संयोगेन वह्नित्वेतरघटत्वाद्यनवच्छिन्न वह्न्यभाव नहीं है, अपितु वह्नि है। अत एव साध्यतावच्छेदक संयोगसंबंधावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकवह्नित्वेतरघटत्वद्यनवच्छिन्नप्रतियोगिताक साध्याभाव होगा केवल वह्न्यभाव, तादृश वह्न्यभाव का अधिकरण होगा जलह्रदादि, तन्निरूपित वृत्तित्व मीनादि में है और अवृत्तित्व धूम में होने से लक्षण सद्धेतु स्थल में समन्वय हो गया। अतः लक्षण में अव्याप्ति दोष नहीं रहा।

उक्त विशेषण को देने के बावजूद भी उक्त सद्धेतु स्थल में ही पुनः अव्याप्ति दोष रह जाता है। कैसे? चालनी न्याय से, गेहूं को पीसने के बाद छलनी से छानते हैं तो आटा और कचडा (बूसा) अलग हो जाता है जब तब आटा में कचडे (बूसे) का अभाव और कचडे(बूसे) में आटे का अभाव होता है। इसे चालनी न्याय कहते हैं। चालनी न्याय से जैसे परस्पर अभाव ग्रहण होता है उसी प्रकार पर्वत में पर्वतीयवह्नि रहने पर भी महानसीयवह्नि का अभाव है और महानस में पर्वतीयवह्नि का अभाव है ऐसे ग्रहण किया जा सकता है। इस प्रकार सभी वह्न्यधिकरणों में तत्तद्वह्न्यभाव मिल जायेगा। अतः साध्यतावच्छेदकसंबंध संयोग संबंध से चालनी न्याय के बल पर साध्याभावशब्द से महानसीय वह्न्यभाव को लिया जा सकता है, तादृश महानसीय वह्न्यभाव का अधिकरण होगा पर्वत, तन्निरूपित वृत्तित्व ही धूम में है, अवृत्तित्व नहीं। अतः प्रकृत सद्धेतु स्थल में लक्षण न घटने से लक्षण अव्याप्ति दोष से ग्रस्त हो गया। इस दोष को दूर करने केलिये लक्षण के साध्याभाव का शरीर में साध्यतावच्छेदकावच्छिन्न यह विशेषण देना होगा। तब लक्षण का स्वरूप ऐसा होगा साध्यतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्न साध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिताकसाध्याभावाधिकरणनिरूपितवृत्तित्वाभावो व्याप्तिः। साध्य जिस स्वधर्म अथवा स्वगतजाति से अवच्छिन्न होकर अर्थात् अधिकरण आदि अन्य वस्तु या अन्य धर्म से परिच्छिन्न न होकर पक्ष में रहता हो उस स्वधर्म अथवा स्वगतजाति को साध्यतावच्छेदक कहा जाता है। प्रकृतस्थल में साध्य है वह्नि, स्वगतजाति है वह्नित्व, उससे अवच्छिन्न होगा सकल वह्नि जिसके अन्तर्गत पर्वतीयवह्नि भी है। अतः साध्यतावच्छेदकसंयोगसंबंधावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकवह्नित्वेतरघटत्वाद्यनवच्छिन्न साध्यतावच्छेदक वह्नित्वावच्छिन्नप्रतियोगिताक साध्याभाव होगा वह्निसामान्याभाव, जिसके अन्तर्गत पर्वतीयवह्न्यभाव भी है, तादृश वह्निसामान्याभाव का अधिकरण पर्वत नहीं हो सकता (क्योंकि पर्वत में संयोगेन वह्नित्वेन वह्नि है) किन्तु जलह्रदादि होगा, तन्निरूपित वृत्तित्व मीनादि में है और अवृत्तित्व धूम में होने से लक्षण सद्धेतु स्थल में समन्वय हो गया। अतः लक्षण में अव्याप्ति दोष नहीं रहा।

तथापि अव्याप्यवृत्तिकगुणादिसाध्यकसद्धेतुस्थल में पुनः अव्याप्ति दोष होगा। अव्याप्यवृत्तिवाले गुण अपने अधिकरण में पूर्णरूप से व्याप्त होकर नहीं रहते हैं अर्थात् जैसे अव्याप्यवृत्ति गुण संयोग है, वह अपने अधिकरण का एकदेश में है तो अपने अधिकरण का ही अन्यदेश में नहीं रहता है। इसलिये एतद्वृक्षः कपिसंयोगी एतद्वृक्षत्वात् इस सद्धेतु स्थल में अव्याप्ति दोष होगा। कैसे? यत्र यत्र एतद्वृक्षत्वं तत्र तत्र कपिसंयसेगित्वं यह व्याप्ति अव्यभिचारी होने से यह हेतु सद्धेतु है। वृक्ष में शाखा पर कपिसंयोग है और उसी वृक्ष का मूल में कपिसंयोग का अभाव है। इस स्थल में साध्यतावच्छेदकसंबंध है समवाय और साध्यतावच्छेदक धर्म है कपिसंयोगत्व। उक्त लक्षणानुसार साध्यतावच्छेदकसमवायसंबंधावच्छिन्न साध्यतावच्छेदककपिसंयोगत्वेतरघटत्वाद्यनवच्छिन्न साध्यतावच्छेदककपिसंयोगत्वावच्छिन्नप्रतियोगिताक साध्याभाव कपिसंयोगाभाव का अधिकरण मूलावच्छेदेन वृक्ष ही है तन्निरूपित वृत्तित्व एतद्वृक्षत्व सद्धेतु में है, अवृत्तित्व नहीं आया। अतः लक्षण अव्याप्ति दोष से ग्रस्त हो गया। इस दोष का निवारण केलिये साध्याभाव शरीर में प्रतियोगिव्यधिकरण विशेषण देना चाहिये। क्योंकि मूलावच्छेदेन वृक्षवृत्ति कपिसंयोगाभाव प्रतियोगि कपिसंयोग का समानाधिकरण ही है, व्यधिकरण नहीं है। अब लक्षण का यह स्वरूप बनता है -

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

साध्यतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिताक साध्याभाव अधिकरणं यत्प्रतियोग्यनधिकरणं तन्निनिरूपित वृत्तित्वाभावो व्याप्तिः। प्रकृत स्थल में देखें साध्यतावच्छेदक समवायसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदककपिसंयोगत्वेतरघटत्वाद्यनवच्छिन्नसाध्यतावच्छेदककपिसंयोगत्वावच्छिन्नप्रति योगिताक साध्याभाव कपिसंयोगाभाव का अधिकरण होते हुए प्रतियोगि कपिसंयोग का व्यधिकरण भी हो ऐसा कहने पर तादृशाभावाधिकरण एवं प्रतियोगिव्यधिकरण वृक्ष नहीं हो सकता है, क्योंकि वह मूलावच्छेदेन तादृशाभावाधिकरण होने पर भी प्रतियोगि का समानाधिकरण है, किन्तु तादृशाभावाधिकरण प्रतियोंगि व्यधिकरण भूतलादि होगा तन्निरूपित वृत्तित्व भूतलत्वादि में और अवृत्तित्व एतद्वृक्षत्व में आने से लक्षण सद्धेतु स्थल में समन्वय हो गया। अतः लक्षण में अव्याप्ति दोष नहीं रहा।

फिरभी विशिष्टं शुद्धान्नातिरिच्यते इस न्याय से घटो विशिष्टसत्तावान् जातेः इस असद्धेतु स्थल में लक्षण का जाने से अतिव्याप्ति दोष होगा। क्योंकि प्रतियोगि को किस धर्म से ग्रहण करना चाहिये यह नहीं कहा गया है। कैसे? यत्र यत्र जातिः तत्र तत्र विशिष्टसत्ता यह व्यभिचारी व्याप्ति है क्योंकि प्रकृत स्थल में गुणकर्म में न रहनेवाली घटात्मकद्रव्यमात्र में रहनेवाली सत्ता को विशिष्टसत्ताशब्द से साध्य के रूप में ग्रहण किया गया है। जाति द्रव्यगुणकर्म तीनों में रहती है। प्रत्येक वस्तु में केवल अपने में रहनेवाला एक विशेषधर्म होता है जिसे विशिष्टधर्म कहते हैं और एक सामान्यधर्म होता है जो कि अपने में और अन्यों में भी रहता है जिसे शुद्धधर्म कहते हैं। शुद्धधर्मदृष्ट्या उसधर्मवाले समस्त वस्तु समान हो जाते हैं और विशिष्टधर्मदृष्ट्या एक ही विशेष वस्तु ग्रहण होगा। शुद्धधर्मदृष्टि से विशेष वस्तु और सामान्य वस्तु दोनों को समानरूप से ग्रहण करना ही विशिष्टं शुद्धान्नातिरिच्यते न्याय है। इस न्याय के आधार पर प्रकृत स्थल में दोष दिया जा रहा है। क्योंकि प्रकृत स्थल में गुणकर्म में न रहनेवाली घटात्मकद्रव्यमात्र में रहनेवाली सत्ता को विशिष्टसत्ताशब्द से साध्य के रूप में ग्रहण किया गया है। शुद्धसत्ता द्रव्यगुणकर्म तीनों में रहती है। साध्य विशिष्टसत्ता पक्ष घट में समवाय संबंध से रहती है। अतः साध्यतावच्छेदकसमवाय संबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकविशिष्टसत्तात्वेतरपटत्वाद्यनवच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकविशिष्टसत्तात्वावच्छिन्नप्रतियोगि ताक साध्याभाव विशिष्टसत्ताभाव का अधिकरण होते हुए उक्त न्याय के अनुसार तादृशाभाव का प्रतियोगि जैसे विशिष्टसत्ता है वैसे शुद्धसत्ता भी होगी उसका व्यधिकरण सामान्यादि होगा, तन्निरूपित वृत्तित्व समवाय में, अवृत्तित्व जाति में है। अर्थात् असद्धेतु स्थल में समन्वय हो गया। अतः लक्षण में अतिव्याप्ति दोष आगया। इस दोष को दूर करने केलिये साध्याभाव का शरीर में प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्न विशेषण देना होगा। तब प्रतियोगि विशिष्टसत्ता का अवच्छेदक विशिष्टसत्तात्व होगा, उक्त न्याय के अनुसार शुद्धसत्तात्व को प्रतियोगितावच्छेदकशब्द से नहीं ग्रहण कर सकते हैं। तब लक्षण का स्वरूप ऐसा होगा – साध्यतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिताकसाध्याभावाधि करणं यत्प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोग्यनधिकरणं तन्निनिरूपित वृत्तित्वाभावो व्याप्तिः। अब प्रकृत स्थल में दोष नहीं रहेगा। क्योंकि साध्यतावच्छेदकसमवायसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकविशिष्टसत्तात्वेतरपटत्वाद्यनव च्छिन्नसाध्यतावच्छेदकविशिष्टसत्तात्वावच्छिन्नप्रतियोगिताकसाध्याभाव विशिष्टसत्ताभाव का अधिकरण होते हुए तादृशाभाव का प्रतियोगि प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टसत्तात्वावच्छिन्न विशिष्टसत्ता ही होगी, शृद्धसत्ता नहीं हो सकती, अतः तादृशाभाव का अधिकरण होते हुए विशिष्टसत्तात्वावच्छिन्नविशिष्टसत्तारूपी प्रतियोगि का व्यधिकरण गुणकर्म ही होगा, क्योंकि विशिष्टसत्ता द्रव्यमात्र में रहती है गुणकर्म में नहीं, तन्निरूपित वृत्तित्व जाति में है, अवृत्तित्व नहीं। इस प्रकार असद्धेतु स्थल में लक्षण का न जाने से अतिव्याप्ति दोष नहीं रहा।

किन्तु प्रतियोगि को अपने व्यधिकरण में किस संबंध से ग्रहण करना चाहिये यह नहीं कहा गया है, अतः उक्त असद्धेतुस्थल में ही पुनः अतिव्याप्ति दोष होगा। कैसे? नित्येषु कालिकायोगात् इस नियम से परमाण्वाकाशकालदिगात्मामन, नित्यगुण, सामान्य, आदि नित्य पदार्थों में कालिकसंबंध से कुछ भी वस्तु नहीं रहता है। अतः साध्यतावच्छेदकसमवायसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकविशिष्टसत्तात्वेतरपटत्वाद्यनवच्छिन्न साध्यतावच्छेदकविशिष्टसत्तात्वावच्छिन्नप्रतियोगिताकसाध्याभाव विशिष्टसत्ताभाव का अधिकरण होते हुए कालिकसंबंध से तादृशाभाव का प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टसत्तात्वच्छिन्नविशिष्टसत्तारूपी प्रतियोगि का

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

व्यधिकरण सामान्यादि होगा, क्योंकि सामान्यादि नित्यपदार्थों में कालिकसंबंध से विशिष्टसत्ता नहीं रहती है, तन्निरूपित वृत्तित्व समवाय में है, जाति में नहीं है अर्थात् अवृत्तित्व है। इस प्रकार असद्धेतु स्थल में लक्षण का जाने से अतिव्याप्ति दोष हो गया। इस दोष को निवारण करने केलिये साध्याभाव शरीर में प्रतियोगितावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न विशेषण देना चाहिये। तब लक्षण इस प्रकार होगा - साध्यतावच्छेदक संबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिताकसाध्याभावाधिकरणं यत्प्रति-योगितावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्न प्रतियोग्यनधिकरणं तन्निनिरूपित वृत्तित्वाभावो व्याप्तिः। अब प्रकृतस्थल में दोष नहीं होगा क्योंकि प्रतियोगि अपने अधिकरण में जिस संबंध से रहता है उसे प्रतियोगितावच्छेदकसंबंध कहा जाता है, प्रकृतस्थल में प्रतियोगि विशिष्टसत्ता अपने अधिकरण घट में समवायसंबंध से रहता है कालिकसंबंध से नहीं। अतः साध्यतावच्छेदकसमवायसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदक विशिष्टसत्तात्वेतरपटत्वाद्यनवच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकविशिष्टसत्तात्वावच्छिन्नप्रतियोगिताकसाध्याभाव विशिष्टसत्ता के अभाव का अधिकरण होते हुए प्रतियोगितावच्छेदकसमवायसंबंधावच्छिन्नप्रतियोगितावच्छेदक विशिष्ट सत्तात्वावच्छिन्न विशिष्टसत्तारूपी प्रतियोगि का व्यधिकरण गुणकर्म ही होगा, तन्निरूपित वृत्तित्व जाति में है, अवृत्तित्व नहीं। इस प्रकार असद्धेतु स्थल में लक्षण का न जाने से अतिव्याप्ति दोष नहीं रहा। अथवा प्रतियोगि को अपने व्यधिकरण में किस संबंध से ग्रहण करना चाहिये यह नहीं कहा गया है, अतः एक दूसरे असद्धेतुस्थल में पुनः अतिव्याप्ति दोष होगा। कैसे? नित्येषु कालिकायोगात् इस नियम से परमाण्वाकाशकालदिगात्मामन, नित्यगुण, सामान्य, आदि नित्य पदार्थों में कालिकसंबंध से कुछ भी वस्तु नहीं रहता है। आत्मा ज्ञानवान् सत्त्वात् यह असद्धेतुस्थल है, क्योंकि यत्र यत्र सत्तात्वं तत्र तत्र ज्ञानवत्त्वं यह व्याप्ति आत्म भिन्न सभि वस्तु में व्यभिचारी है। इस असद्धेतु स्थल में साध्यतावच्छेदकसमवायसंबंधाव च्छिन्नसाध्यतावच्छेदकज्ञानत्वेतरपटत्वाद्यनवच्छिन्न साध्यतावच्छेदकज्ञानात्वावच्छिन्न प्रतियोगिताक साध्याभाव ज्ञानाभाव का अधिकरण होते हुए कालिकसंबंध से तादृशाभाव का प्रतियोगितावच्छेदक ज्ञानत्वावच्छिन्न ज्ञानरूपी प्रतियोगि का व्यधिकरण सामान्यादि होगा, क्योंकि सामान्यादि नित्यपदार्थों में कालिकसंबंध से ज्ञान नहीं रहता है, तन्निरूपित वृत्तित्व समवाय में है, सत्ता में नहीं है अर्थात् अवृत्तित्व है। इस प्रकार असद्धेतु स्थल में लक्षण का जाने से अतिव्याप्ति दोष हो गया। इस दोष को निवारण करने केलिये साध्याभाव शरीर में प्रतियोगितावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न विशेषण देना चाहिये। तब लक्षण इस प्रकार होगा - साध्यतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिताक साध्याभावा धिकरणं यत् प्रतियोगितावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोग्यनधिकरणं तन्निनिरूपित वृत्तित्वाभावो व्याप्तिः। अब प्रकृतस्थल में दोष नहीं होगा क्योंकि प्रतियोगि अपने अधिकरण में जिस संबंध से रहता है उसे प्रतियोगितावच्छेदकसंबंध कहा जाता है, प्रकृतस्थल में प्रतियोगि ज्ञान अपने अधिकरण आत्मा में समवायसंबंध से रहता है कालिकसंबंध से नहीं। अतः साध्यतावच्छेदकसमवायसंबंधावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकज्ञानत्वेतरपटत्वाद्यनवच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकज्ञानत्वावच्छिन्नप्रतियोगिताक साध्याभाव ज्ञानाभाव का अधिकरण होते हुए प्रतियोगितावच्छेदकसमवायसंबंधावच्छिन्नप्रतियोगितावच्छेदकज्ञानत्वावच्छिन्न ज्ञानरूपी प्रतियोगि का व्यधिकरण घटपटगुणकर्मादि होगा, तन्निरूपित वृत्तित्व सत्ता में है, अवृत्तित्व नहीं। इस प्रकार असद्धेतु स्थल में लक्षण का न जाने से अतिव्याप्ति दोष नहीं रहा।

लेकिन लक्षण में उक्त तादृश अधिकरण निरूपित वृत्तित्व किस संबंध से ग्रहण करना चाहिये यह नहीं कहा गया है। घट आत्मभिन्नो द्रव्यत्वात् यह असद्धेतुस्थल है, क्योंकि यत्र यत्र द्रव्यत्वं तत्र तत्र आत्मभिन्नत्वं यह व्याप्ति आत्मा में ही व्यभिचारी है, क्योंकि आत्मा में द्रव्यत्व हेतु है किन्तु आत्मभिन्नत्व नहीं है। इस असद्धेतु स्थल में पुनः अतिव्याप्ति दोष होगा। इस स्थल में साध्यतावच्छेदकसंबंध तादात्म्य है, क्योंकि साध्य आत्मभेद पक्ष घट में तादात्म्यसंबंध से रहता है। जिस संबंध से हेतु पक्ष में रहता है वह हेतुतावच्छेदकसंबंध है। प्रकृत स्थल में हेतु द्रव्यत्व पक्ष घट में समवायसंबंध से रहता है, अतः हेतुतावच्छेदकसंबंध समवाय है। साध्यतावच्छेदकतादात्म्यसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकात्मभिन्नत्वेतरपटत्वाद्यन वच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकात्मभिन्नत्वावच्छिन्नप्रतियोगिताक साध्याभाव आत्मभेदाभाव का अधिकरण होते हुए प्रतियोगितावच्छेदकतादात्म्यसंबंधावच्छिन्न प्रतियोगितावच्छेदकात्मभिन्नत्वावच्छिन्नात्मभेदरूपी प्रतियोगि का

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

व्यधिकरण आत्मा होगा, तन्निरूपित वृत्तित्व कालिकसंबंध से किसी में भी नहीं है, अतः अवृत्तित्व द्रव्यत्वरूपी असद्धेतु स्थल में होने से लक्षण में अतिव्याप्ति दोष हो गया। इस अतिव्याप्ति दोष को दूर करने केलिये वृत्तित्वाभावशरीर में हेतुतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न विशेषण देना होगा। तब लक्षण का स्वरूप ऐसा होगा साध्यतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिताक साध्याभावाधिकरणं यत्प्रतियोगितावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्न प्रतियोग्यनधिकरणं तन्निनिरूपित हेतुतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्नप्रतियोगिताक वृत्तित्वाभावो व्याप्तिः। अब प्रकृतस्थल में घटाके देखें साध्यतावच्छेदकतादात्म्यसंबंधावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकात्मभिन्नत्वेतरपटत्वाद्यनवच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकात्मभिन्नत्वा वच्छिन्न प्रतियोगिताक साध्याभाव आत्मभेदाभाव का अधिकरण होते हुए प्रतियोगितावच्छेदकतादात्म्य संबंधावच्छिन्नप्रतियोगितावच्छेदक आत्मभिन्नत्वावच्छिन्न आत्मभेदरूपी प्रतियोगि का व्यधिकरण आत्मा होगा, तन्निरूपित हेतुतावच्छेदकसमवायसंबंध से अवच्छिन्न वृत्तित्व द्रव्यत्व में है, अतः अवृत्तित्व द्रव्यत्वरूपी असद्धेतु स्थल में न होने से लक्षण में अतिव्याप्ति दोष नहीं रहा।

तथापि पर्वतो धूमवान् वह्नेः इस असद्धेतु स्थल में अतिव्याप्ति दोष होगा। इस स्थल में साध्यतावच्छेदकसंबंध और हेतुतावच्छेदकसंबंध दोनों ही संयोग है। क्योंकि उक्त लक्षण घटकीभूत अधिकरणनिरूपित यत्किचिद्वृत्तित्व लेना है अथवा यावद्वृत्तित्व लेना है यह नहीं कहा गया है। अतः साध्यतावच्छेदकसंयोगसंबंधावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकधूमत्वेतरपटत्वाद्यनवच्छिन्न साध्यतावच्छेदकधूमत्वावच्छिन्न प्रतियोगिताकसाध्याभाव धूमभाव का अधिकरण होते हुए प्रतियोगितावच्छेदकसंयोगसंबंधावच्छिन्न प्रतियोगितावच्छेदकधूमत्वावच्छिन्न धूमरूपी प्रतियोगि का व्यधिकरण जलह्रदादि होगा, तन्निरूपित हेतुतावच्छेदकसंयोगसंबंध से अवच्छिन्न वृत्तित्व मीनादि में है, और अवृत्तित्व वह्निरूपी असद्धेतु में होने से लक्षण में अतिव्याप्ति दोष हो गया। इसका निवारण केलिये वृत्त्यभावशरीर में वृत्तितावच्छेदकावच्छिन्न अर्थात् वृत्तितात्वावच्छिन्न विशेषण देना चाहिये। तब लक्षण का यह स्वरूप्प होगा साध्यतावच्छेदक संबंधावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्न साध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिताक साध्याभावाधिकरणं यत्प्रतियोगितावच्छेदकसंबंधावच्छिन्नप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोग्यनधिकरणं तन्निनिरूपित हेतुतावच्छेदक संबंधावच्छिन्नवृत्तितावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिताकवृत्तित्वाभावो व्याप्तिः। अब प्रकृतस्थल में घटाके देखें - उक्त विशेषणों से युक्त वृत्तितात्वावच्छिन्नप्रतियोगिताकवृत्त्यभाव का अर्थ है यावद्वृत्तित्वाभाव, अतः जलह्रद निरूपित वुत्त्यभाव वह्नि में रहने पर भी अयोगोलक निरूपित वुत्त्यभाव वह्नि में नहीं है। अतः अवृत्तित्व वह्निरूपी असद्धेतु स्थल में न होने से लक्षण में अतिव्याप्ति दोष नहीं रहा।

पुनः एक सत्त्वे अपि द्वयं नास्ति न्याय से उसी असद्धेतु स्थल में अतिव्याप्ति दोष होगा। कैसे? साध्यतावच्छेदकसंयोगसंबंधावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकधूमत्वेतरपटत्वाद्यनवच्छिन्न साध्यतावच्छेदकधूमत्वावच्छिन्न प्रतियोगिताक साध्याभाव धूमभाव का अधिकरण होते हुए प्रतियोगितावच्छेदकसंयोगसंबंधावच्छिन्न प्रतियोगितावच्छेदकधूमत्वावच्छिन्न धूमरूपी प्रतियोगि का व्यधिकरण अयोगोलक है तन्निरूपित हेतुतावच्छेदक संयोग संबंध से अवच्छिन्न वृत्तित्व वह्नि में रहने पर भी वह्निघटोभय में नहीं है, अतः उभय का अवयव वह्निरूपी असद्धेतु में वृत्तित्व न होने से लक्षण में अतिव्याप्ति दोष हो गया। इस दोष को दूर करने केलिये वृत्तितावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्न विशेषण देना होगा। इसलिये अब निष्कृष्ट लक्षण का यह स्वरूप बनता है साध्यतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्न साध्यतावच्छेदकावच्छिन्न प्रतियोगिताक साध्याभावाधिकरणं यत्प्रतियोगितावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्न प्रतियोग्य नधिकरणं तन्निरूपित हेतुतावच्छेदकसंबंधावच्छिन्न वृत्तितावच्छेदकेतरधर्मानवच्छिन्न वृत्तितावच्छेदकावच्छिन्न (वृत्तितात्त्वावच्छिन्न) प्रतियोगिताक वृत्तित्वाभावो व्याप्तिः। अब अयोगोलक निरूपित वृत्तित्वाभाव से वह्निघटोभयाभाव नहीं ले सकते क्योंकि वह अयोगोलक निरूपित वृत्तित्व जो वह्नि में है उसका अवच्छेदक अर्थात् वृत्तितावच्छेदक वह्नित्व से इतर घटत्व से अवच्छिन्न है, अतः लक्षण घटक वृत्त्यभावशब्द से तादृशोभयाभाव नहीं ले सकते, अपितु केवल वह्न्यभाव लेना होगा, किन्तु वह संभव नहीं, क्योंकि अयोगोलक में वह्नि है। इसलिये अयोगोलक निरूपित वृत्तित्व ही वह्नि में है, अवृत्तित्व वह्नि में नहीं है। इस प्रकार अतिव्याप्ति दोष दूर होने पर निष्कृष्ट लक्षण निर्दोष हो गया। इत्यों शम्।

Font: Kundli, Size: 16.

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM